जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मामनुस्मर युद्ध्य च — जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ

भारत सरकार पंजीसन नं. : 72322/91

शेखावाटी सन्मार्ग

सतीनां वै सतांचैव दातृणां विदुषा तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्गं मनोहरम्।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक । वर्ष–33 । अंक–01 । लक्ष्मणगढ 16 अक्टूबर 2023 । मूल्य (विशेषांक सहित) 100 रू. वार्षिक ।

16 अक्टूबर को प्रातः 8 बजे श्री रघुनाथ जी के मन्दिर से निकलेगी कलश यात्रा

लक्ष्मणगढ़ (निजसंवाददाता) 01अक्टूबर । रामलीला मैदान में 16 से 22 अक्टूबर तक आयोजित होने वाली श्रीमद् भागवत कथा के लिए जनसंपर्क, श्री रघुनाथ जी के मंदिर से नगर के प्रमुख मार्गो से निकलने वाली महिला कलश यात्रा में शामिल होने वाली महिलाओं को निमंत्रण देने व टोकन का कार्य वार्डों में अनवरत जारी है।

यह जानकारी देते हुए महिला समिति की मंत्री डॉ. अर्चना पुरोहित ने बताया कि कस्बे में होने वाली श्रीमद् भागवत कथा, कलश यात्रा व शोभा यात्रा भव्य, विशाल व ऐतिहासिक हो इसके लिए आयोजन समिति के अध्यक्ष गिरधारी लाल सैनी के नेतृत्व में समिति के पदाधिकारी, सदस्य व महि ला वार्ड प्रभारी जनसंपर्क व टोकन वितरण में जुटे हुए हैं। डॉ . पुरोहित ने बताया कि नगर पालिका क्षेत्र के सभी वार्डों में वार्ड प्रभारी नियुक्त कर कलश यात्रा में शामिल होने वाली महिलाओं की सूची तैयार कर टोकन की व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि कलश यात्रा के लिए ड्रेस कोड भी निर्धारित किया गया है तथा प्रत्येक वार्ड में महिला कलश यात्रा की सूची तैयार करने के बाद टोकन वितरण का वार्डों में सुचारू रूप से जारी किया जा रहा है।

डॉ. पुरोहित ने बताया कि कलश यात्रा के दिन 16 अक्टूबर को प्रातः 8 बजे कलश यात्रा में शामिल होने वाली महिलाएं निर्धारित ड्रेस कोड के साथ टोकन को लेकर कलश यात्रा स्थल श्री रघुनाथ जी के मंदिर बड़ा मंदिर पहुंचेगी । जहां से कलश यात्रा रवाना होकर चौपड़ बाजार, मुरली मनोहर मंदिर, पक्की प्याऊ, कबूतरिया कुआं होते हुए रामलीला मैदान पहुंचेगी ।

कथा स्थल का लिया जायजा, दिए आवश्यक निर्देश :- नगरपालिका अध्यक्ष मुस्तफा कुरैशी ने बुधवार को कस्बे के रामलीला मैदान में होने वाली श्रीमद् भागवत कथा की व्यवस्थाओं को जायजा लिया तथा सफाई व समुचित व्यवस्था के निर्देश पालिका कर्मियों को दिए । पालिका अध्यक्ष ने इस दौरान आयोजन समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों से चर्चा करते हुए आयोजन में पालिका की हर संभव मदद का भरोसा दिलाया, साथ ही साफ-सफाई की व्यवस्था के साथ-साथ, आवारा पशुओं के लिए कारगर कदम उठाने के लिए भी कर्मियों को निर्देश दिए।

वीआईपी पास एवं महिला, पुरुष व बच्चों के लिए अलग-अलग बैठने की होगी व्यवस्था :- रामलीला मैदान में 16 से 22 अक्टूबर तक आयोजित होने वाली परम् पूज्य गोवत्स राधाकृष्ण जी महाराज की श्रीमद् भागवत कथा में महिलाओं, पुरूषों व बच्चों के लिए बैठने की समुचित, शानदार व अलग-अलग व्यवस्था की गई है वहीं कथा के लिए वीआईपी की भी अलग से बैठने की व्यवस्था की गई।

श्रीमद् भागवत कथा आयोजन समिति के मंत्री पुरुषोत्तम मिश्र ने बताया कि करीब 200 कार्यकर्ता व्यवस्था को बनाने में सहयोग करेंगे। उन्होंने बताया कि व्यवस्था में सहयोग करने वाले कार्यकर्ताओं को आई कार्ड जारी किए जाएंगे जो कथा स्थल, प्रसाद वितरण, पार्किंग, आवास, भोजन, पेयजल आदि की व्यवस्था में सहयोग करेंगे ।

आयोजन समिति के प्रवक्ता सज्जन कुमार बबेरवाल ने बताया कि 17 से 22 अक्टूबर तक नगर के विभिन्न क्षेत्रों में महाराजश्री के सानिध्य में प्रभातफेरी निकाली जाएगी। समिति के कार्यालय प्रभारी झाबरमल सिंगोदिया ने बताया कि आयोजन समिति के अध्यक्ष गिरधारी लाल सैनी के नेतृत्व में वार्डो में वार्ड प्रभारी महिलाओं की अगुवाई में कलश यात्रा के टोकन वितरण किए जा रहे हैं तथा घर - घर भागवत कथा के लिए न्यौते दिए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि कथा के दौरान प्रतिदिन अलग - अलग प्रसाद की वितरण की व्यवस्था रहेगी। बड़े स्तर पर व्यवस्थाओं के साथ भागवत का आयोजन किया जा रहा है | आयोजक गिरधारी लाल सैनी महीनों से इस कार्य को व्यवस्थित ढंग से करने में लगे हैं | आशा है कथा सभी रुपों में अविस्मरणीय होगी |

राधाकृष्ण महाराज का जीवन परिचय

जोधपुर में शरद पूर्णिमा के शुभ दिन 'विक्रम संवत 2039 (वर्ष 1982)' में गौड़ ब्राह्मण परिवार में हरिकिशन और मंजुलता को पुत्र के रूप में महाराज के जन्म का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जन्म पर महाराज का नाम "राधाकृष्ण" रखा गया।

बचपन :- बचपन में दादी उंगली पकड़कर सत्संग व कथा सुनाने ले जाती थी। घर के पास ही सत्संग भवन था। हालांकि बचपन से ही संघ से भी जुड़ा था। लेकिन कथा में संतों की वाणी और भगवान् के बारे में सुनकर उन्हें इतना आनंद आया कि उन्होंने नेता, डॉक्टर-इंजीनियर या कलेक्टर बनने की बजाय यह लक्ष्य बनाया कि बड़े होकर भगवान् की कथा सु नाएंगे और लोगों को सत्संग के प्रति प्रेरित करेंगे। अभ्यास के लिए पहले घर में कथा सुनाने लगे फिर छोटी-छोटी जगहों पर। करीब 15 साल की उम्र में पहली बार घर में कथा सुनाई थी। इसके बाद उनको सुनने लोगों का जुड़ाव बढ़ता गया। अपनी तीसरी कथा उन्होंने पाली में सुनाई थी। अब तो पूरे देश में उनकी कथा सुनी जा रही है। गोसेवा के प्रति भी उनका समर्पण ये है कि गोवत्स पाठशाला चलाते हैं। दिसंबर में हर साल रस महोत्सव का आयोजन भी करते हैं। भास्कर से विशेष बातचीत के दौरान उन्होंने सत्संग से जुड़ने, गोसेवा, प्रभात फेरी, युवा और देश के मौजूदा माहौल पर खुलकर विचार रखे।

परिवार की धार्मिक पृष्ठभूमि होने के कारण, महाराज का बचपन अपने दादा-दादी के साथ धर्म-भरे माहौल में बीता, जिसके फलस्वरूप भगवान् के प्रति उनका प्रेम और आस्था मजबूत हुई। महाराज ने श्री वल्लभाचार्य को अपने गुरु के रूप में माना और उनसे दीक्षा प्राप्त की। माता-पिता के आशीर्वाद और भगवान् के प्रति समर्पण से प्रेरित, महाराज ने श्री भागवत कथा के माध्यम से प्रेम की अपनी भावनाओं का प्रचार करना शुरू किया।

गऊ सेवा कार्य :- कृष्ण भगवान की कथा सुनाते-सुनाते गो सेवा के प्रति प्रेम जगा और गोसेवा से जुड़े राधाकृष्ण महाराज के गोसेवा से जुड़ने का रोचक प्रसंग है। वे बताते हैं-भगवान श्रीकृष्ण की कथा सुनाते-सुनाते उन्हें गोसेवा के प्रति प्रेम जागा। क्योंकि कृष्ण भी गायों से अपार प्रेम करते थे। इसलिए उनके मन में गोसेवा के प्रति अलख जगी। वे पथमेड़ा गोशाला जाते हैं। उनका कहना है कि गोसेवा से ही देश की उन्नति है। गोरक्षा से वातावरण शुद्ध होता है।

महाराज "गोधाम पथमेड़ा" (सानावल जलौर) में एक सक्रिय कार्यकर्ता हैं। गौधन गौरीति दत्तशरणानंद की सहायता तथा महाराज द्वारा आयोजित भागवत कथाओं में भक्तों द्वारा किए गए योगदानों का उपयोग सूखे से पीड़ित और दुत्कारी गयी गायों की देखभाल तथा पोषण के लिए किया जा रहा है। महाराज वास्तव में युवाओं में नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों की पुनर्स्थापना के लिए सशक्त रूप से काम कर रहे हैं और संयुक्त परिवार प्रणाली का पुनरुद्धार भी सक्रियता से कर रहे हैं।

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथ: क्वचित् "

लोक पावनी श्रीकृष्ण कथा

श्रीकृष्ण, हिन्दू धर्म में भगवान् है। वे विष्णु के 8वें अवतार माने गए हैं। कन्हैया, श्याम, गोपाल, केशव, द्वारकेश या द्वारकाधीश, वासुदेव आदि नामों से भी उनको जाना जाता है। कृष्ण निष्काम कर्मयोगी, आदर्श दार्शनिक, स्थितप्रज्ञ एवं देवी संपदाओं से सुसज्जित महान् पुरुष थे। उनका जन्म द्वापरयुग में हुआ था। उनको इस युग के सर्वश्रेष्ठ पुरुष, युगपुरुष या युगावतार का स्थान दिया गया है। कृष्ण के समकालीन महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित श्रीमद्भागवत और महाभारत में कृष्ण का चरित्र विस्तृत रूप से लिखा गया है। भगवद्गीता कृष्ण और अर्जुन का संवाद है जो ग्रंथ आज भी पूरे विश्व में लोकप्रिय है। इस उपदेश के लिए कृष्ण को जगतगुरु का सम्मान भी दिया जाता है।

कृष्ण वसुदेव और देवकी की 8वीं संतान थे। देवकी कंस की बहन थी। कंस एक अत्याचारी राजा था। उसने आकाशवाणी सुनी थी कि देवकी के आठवें पुत्र द्वारा वह मारा जाएगा। इससे बचने के लिए कंस ने देवकी और वसुदेव को मथुरा के कारागार में डाल दिया। मथुरा के कारागार में ही भादो मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को उनका जन्म हुआ। कंस के डर से वसुदेव ने नवजात बालक को रात में ही यमुना पार गोकुल में यशोदा के यहाँ पहुँचा दिया। गोकुल में उनका लालन-पालन हुआ था। यशोदा और नन्द उनके पालक माता-पिता थे।

बाल्यावस्था में ही उन्होंने बड़े- बड़े कार्य किए जो किसी सामान्य मनुष्य के लिए सम्भव नहीं थे। अपने जन्म के कुछ समय बाद ही कंस द्वारा भेजी गई राक्षसी पूतना का वध किया. उसके बाद शकटासुर, तृणावर्त आदि राक्षस का वध किया। बाद में गोकुल छोड़कर नंद गाँव आ गए वहां पर भी उन्होंने कई लीलाएं की जिसमे गोचारण लीला, गोवर्धन लीला, रास लीला आदि मुख्य है। इसके बाद मथुरा में मामा कंस का वध किया। सौराष्ट्र में द्वारका नगरी की स्थापना की और वहाँ अपना राज्य बसाया। पांडवों की मदद की और विभिन्न संकटों से उनकी रक्षा की। महाभारत के युद्ध में उन्होंने अर्जुन के सारथी की भूमिका निभाई और रणक्षेत्र में ही उन्हें उपदेश दिया। 124 वर्षों के जीवनकाल के बाद उन्होंने अपनी लीला समाप्त की। उनके अवतार समाप्ति के तुरंत बाद परीक्षित के राज्य का कालखंड आता है। राजा परीक्षित, जो अभिमन्यु और उत्तरा के पुत्र तथा अर्जुन के पौत्र थे, के समय से ही कलियुग का आरंभ माना जाता है।

- **नाम और उपशीर्षक**

"कृष्ण" एक संस्कृत शब्द है, जो "काला", "अंधेरा" या "गहरा नीला का समानार्थी है। अंधकार" शब्द से इसका सम्बन्ध ढलते चंद्रमा के समय को कृष्ण पक्ष कहे जाने में भी स्पष्ट झलकता है। इस नाम का अनुवाद कहीं-कहीं "अति आकर्षक के रूप में भी किया गया है।

श्रीमदभागवत पुराण के वर्णन अनुसार कृष्ण जब बाल्यावस्था में थे तब नन्दबाबा के घर आचार्य गर्गाचार्य द्वारा उनका नामकरण संस्कार हुआ था। नाम रखते समय गर्गाचार्यने बताया कि, 'यह पुत्र प्रत्येक युग में अवतार धारण करता है। कभी इसका वर्ण श्वेत. कभी ताल, कभी पीला होता है। पूर्व के प्रत्येक युगों में शरीर धारण करते हुए इसके तीन वर्ण हो चुके हैं। इस बार कृष्णवर्ण का हुआ है, अतः इसका नाम कृष्ण होगा। वसुदेव का पुत्र होने के कारण उनको 'वासुदेव' कहा जाता है। "कृष्ण" नाम के अतिरिक्त भी उन्हें कई अन्य नामों से जाना जाता रहा है, जो उनकी कई विशेषताओं को दर्शाते हैं। सबसे व्यापक नामों में मोहन, गोविन्द, माधव और गोपाल प्रमुख है।

- **चित्रण**

कृष्ण भारतीय संस्कृति में कई विधाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका चित्रण आमतौर पर विष्णु जैसे कृष्ण काले या नीले रंग की त्वचा के साथ किया जाता है। हालांकि, प्राचीन और मध्ययुगीन शिलालेख भारत और दक्षिणपूर्व एशिया दोनों में, और पत्थर की मूर्तियों में उन्हें प्राकृतिक रंग में चित्रित किया है, जिससे वह बनी है। कुछ ग्रंथों में उनकी त्वचा को काव्य रूप से जांबुल (जामून बैंगनी रंग का फल) के रंग के रूप में वर्णित किया गया है |

कृष्ण को अक्सर मोर पंख वाले पुष्प या मुकुट पहनकर चित्रित किया जाता है, और अक्सर बांसुरी (भारतीय बांसुरी बजाते हुए उनका चित्रण हुआ है। इस रूप में, आम तौर पर भिन्ना मुद्रा में दूसरे के सामने एक पैर को दूसरे पैर पर डाले चित्रित है। कभी- कभी वह गाय या बछड़ा के साथ होते है, जो चरवाहे गोविंद के प्रतीक को दर्शाती है |

अन्य चित्रण में, वे महाकाव्य महाभारत के युद्ध के दृश्यों का एक हिस्सा है। वहां उन्हें एक सारथी के रूप में दिखाया जाता है, विशेष रूप से जब वह पांडव राजकुमार अर्जुन को संबोधित कर रहे हैं, जो प्रतीकात्मक रूप से हिंदू धर्म का एक ग्रंथ भगवद् गीता को सुनाते हैं। इन लोकप्रिय चित्रणों में, कृष्ण कभी पथ प्रदर्शक के रूप में सामने में प्रकट होते हैं, या तो दूरदृष्टा के रूप में, कभी रथ के चालक के रूप में कृष्ण के वैकल्पिक चित्रण में उन्हें एक बालक (बाल कृष्ण) के रूप में दिखाते हैं, एक बच्चा अपने हाथों और घुटनों पर रेंगते हुए नृत्य करते हुए. साथी मित्र ग्वाल बाल को चुराकर मक्खन देते हुए (मक्खन चोर), लड्डू को अपने हाथ में लेकर चलते हुए (लड्डू गोपाल) अथवा प्रलय के समय बरगद के पत्ते पर तैरते हुए एक अलौकिक शिशु जो अपने पैर की अंगुली को चूसता प्रतीत होता है। (ऋषि मार्कंडेय द्वारा विवरणित ब्रह्मांड विघटन) कृष्ण की प्रतिमा में क्षेत्रीय विविधताएं उनके विभिन्न रूपों में देखी जाती है. जैसे ओडिशा में जगन्नाथ, महाराष्ट्र में विट्ठल या विठोबा राजस्थान में श्रीनाथ जी, गुजरात में द्वारकाधीश और केरल में गुरुवायरुप्पन अन्य चित्रणों में उन्हें राधा के साथ दिखाया जाता है जो राधा और कृष्ण के दिव्य प्रेम का प्रतीक माना जाता है। उन्हें कुरुक्षेत्र युद्ध में विश्वरूप में भी दिखाया जाता है जिसमें उनके कई मुख हैं और सभी लोग उनके मुख में जा रहे हैं। अपने मित्र सुदामा के साथ भी उनको दिखाया जाता है जो मित्रता का प्रतीक है।

वास्तुकला में कृष्ण चिह्नों एवं मूर्तियों के लिए दिशानिर्देशों का वर्णन मध्यकालीन युग में हिन्दू मंदिर कलाओं जैसे वैखानस अगम विष्णुधर्मोत्तर पुराण, बृहत् संहिता और अग्नि पुराण में वर्णित है | इसी तरह, मध्यकालीन युग के शुरुआती तमिल ग्रंथों में कृष्ण और रुक्मणी की मूर्तियां भी सम्मिलित है। इन दिशानिर्देशों के अनुसार बनाई गई कई मूर्तियां सरकारी संग्रहालय, चेन्नई के संग्रह में है।

- **ऐतिहासिक और साहित्यिक स्रोत**

एक व्यक्तित्व के रूप में कृष्ण का विस्तृत विवरण सबसे पहले महाकाव्य महाभारत में लिखा गया है | जिसमें कृष्ण को विष्णु के अवतार के रूप में दर्शाया गया है। महाकाव्य की मुख्य कहानियों में से कई कृष्ण केंद्रीय ही श्री भगवत गीता का निर्माण करने वाले महाकाव्य के छठे पर्व (भीष्म पर्व) के अठारहवे अध्याय में युद्ध के मैदान में श्रीकृष्ण अर्जुन को ज्ञान देते हैं। महाभारत के बाद के परिशिष्ट में हरिवंश में कृष्ण के बचपन और युवावस्था का एक विस्तृत संस्करण है।

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

जप का महत्त्व

श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि । जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ।१।

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् । पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ।२।
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् । योऽस्मात् परस्माद्य परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ।३।

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं कचिद् विभातं क्व च तत् तिरोहितम् ।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः ।४।
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु ।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः ।५।
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ।६।
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः ।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ।७।
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकाप्ययसंभवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ।८।

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये । अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ।९।
नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने । नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ।१०।
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता । नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ।११।
नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे । निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ।१२।
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे । पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ।१३।
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे । असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः |१४|

नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय ।१५।
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि ।१६।
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय ।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीतप्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ।१७।
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय ।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ।१८।
यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ।१९।
एकान्तिनो यस्य न कञ्चनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमंगलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः |२०|
तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ।२१।
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्व्या च कलया कृताः ॥२२॥
यथार्चितऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः |
तथा यतोऽयं गुणसंप्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥२३॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्निषेधशेषो जयतादशेषः ।२४।
जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् |२५|
सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ।२६।
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥२७॥
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने |२८|
नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ।२९।

इतिहास र माय पहली बार महाराणा प्रताप री दिवेर युद्ध री जीत रो नाट्य रूप में मंचन शेखावाटी साहित्य संगम र मांय कर्यो गयो

सीकर (निजसंवाददाता) | 28 सितंबर से 2 अक्टूबर तक आयोजित होने वाले साहित्य संगम में पिछली बार धाय मां पन्ना के बलिदान पर नाट्य प्रस्तुति हुई थी। इसी क्रम में इस वर्ष शेखावाटी साहित्य संगम के चौथे संस्करण में शनिवार, 30 सितंबर को पहली बार दिवेर युद्ध विजय का नाट्य मंचन दीपक भारद्वाज के निर्देशन में यूथ तरंग संस्कृत नाट्य दल, जयपुर द्वारा प्रस्तुत किया गया। शेखावाटी साहित्य संगम के संयोजक अभिमन्यु सिंह का कहना है कि इस प्रकार के गौरवपूर्ण व ऐतिहासिक नाट्य का मंचन भारत के विचार व स्वाभिमान को घर- घर व जन- जन तक जागृति लाने का कार्य करेंगे |

विशेषकर युवा पीढ़ी में विजय के भाव जगायेंगे। दिवेर राजस्थान ही नहीं, पूरे विश्व में भारत को गौरवान्वित करने वाला विजय तीर्थ स्थल है, जहां एक भव्य विजय स्मारक भी बना है। साहित्य संगम के संध्या कालीन कार्यक्रमों के संयोजक डॉ नेकीराम बताते हैं कि इस नाटक के दृश्य जो मुख्य आकर्षण के केंद्र - महाराणा प्रताप द्वारा बहलोल खां को चीरना, 14 वर्ष की आयु में युवराज अमर सिंह का सेनापति सुल्तान खां पर भाले से वार कर, उसे घोड़े समेत चीर देना . जनजाति सहित सर्व समाज का सहयोग व भामाशाह द्वारा मातृभूमि के लिए अपने सम्पूर्ण धन का समर्पण आदि रहे । कलाकार मंडली में सह निदेशक संदीप सहित यशस्वी, अर्जुन, देव आदि रहे।

इसके लिए सशुल्क टिकट व्यवस्था शहर के विभिन्न काउंटर एवं रजिस्ट्रेशन डेस्क पर उपलब्ध रहे। भारतीय संविधान और भारत का स्व विषय पर लक्ष्मीनारायण भाला, हिरेन जोशी, इंदुशेखर तत्पुरुष ने अपने विचार रखे। तत्पुरुष ने कहा कि सेक्युलर शब्द का गलत प्रयोग हुआ है और सेक्युलर का अर्थ लौकिक होता है। प्रस्तावना में इसका अर्थ लिखा है पंथनिरपेक्ष ।

भाला ने कहा स्कंद पुराण के 50 वें अध्याय में भारत शब्द का वर्णन बताया गया। नारायण भाला ने कहा कि हमारी राजभाषा हिंदी है लेकिन अंग्रेजी के उपयोग के अधिक उपयोग के कारण हम इसे आज तक अपना नहीं पाए हैं क्योंकि हम मानसिक गुलामी से बाहर नहीं आ पाए हैं। नागरिक शिष्टाचार विषय आधारित चर्चा पर नारायण भाला, तत्पुरुष, जोशी और मेजर पूनिया ने अपने विचार साझा किए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दू विषय पर इंदुशेखर तत्पुरुष और दीपक गोस्वामी ने चर्चा की। कार्यक्रम में रैवासा धाम के संत डॉ. राघवाचार्य जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ।

महाराज ने कहा कि साहित्य ज्ञानवर्धन का एक अमूल्य साधन है अज्ञान के कारण व्यक्ति अनेक ऐसी धारणाएं बना लेता है जिसके बहाव में वो गलत रास्ते पर चला जाता है। प्रतियोगिता में वर्धमान विद्या विहार सीकर प्रथम, एम के मेमोरियल द्वितीय तथा एस ए प्रज्ञा भारती शिक्षण संस्थान ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

पिकनिक पर बस में जा रहे स्कूली बच्चों पर मधुमक्खियों ने किया हमला

1 की हुई मौत, 3 गम्भीर घायल, डेढ़ दर्जन से ज्यादा घायल

लक्ष्मणगढ (निजसंवाददाता)01 अक्टूबर। पिकनिक भ्रमण पर जा रहें सरदारशहर के निजी विद्यालय के विधार्थियों पर मधुमक्खियों ने हमला कर दिया जिससे एक बच्चे की मौत हो गई जबकि तीन बच्चे गम्भीर घायल व डेढ़ दर्जन घायल हो गए। सभी बच्चों को यहां के जिला अस्पताल लाया गया जहां घायलों का चिकित्सक इलाज करने में जुटे हैं।

मिली जानकारी के अनुसार भ्रमण पर सरदारशहर से रविवार को सुबह बस से रवाना हुए निजी स्कूल के विधार्थी छिंछास बस स्टैंड पर रुके थे जहां अचानक मधुमक्खी बस के अंदर घूस गई। अचानक हुए मधुमक्खियों के हमले में करीब बीस बच्चे घायल हो गए जिन्हें सरकारी जिला अस्पताल लाया गया। मधुमक्खी के हमले में एक बच्चे की मौत हो गई जबकि तीन गम्भीर रूप से घायल हो गए करीब डेढ़ दर्जन घायल हो गए।

बच्चे की दुःखद मौत पर शेखावाटी सन्मार्ग हार्दिक दुःख व्यक्त करता है |

सदस्यता अभियान

सदस्यता - वार्षिक शुल्क 100/- एक सौ रुपये मात्र 9828665353 paytm number पर भुगतान करके रसीद एवं पता इसी नम्बर पर व्हाट्स एप्प करें और सदस्य बने |

विज्ञापन राशि - फुल पेज ब्लैक एंड वाइट 3000/- , आधा पेज 1500/- , चौथाई पेज 750/-, वर्गीकृत 250/-

फाउंडेशन डे व गांधी- शास्त्री जयंती मनाई

लक्ष्मणगढ़ **(निजसंवाददाता) 2 अक्टूबर** | विनायक शिक्षा संकुल की इकाई विनायक इंटरनेशनल स्कूल में सोमवार को फाउंडेशन डे, गांधी व शास्त्री जयंती मनाई गई। स्कूल प्रशासक प्रिया शर्मा व इंचार्ज संतोष पूनिया ने बताया कि विनायक ग्रुप के सीएमडी नवरंग चौधरी लालासी के सानिध्य में तथा सेना अधिकारी भान सिंह व पार्षद विष्णु शर्मा के आतिथ्य में गांधी जी व शास्त्री जी को याद किया गया। स्कूल के फाउंडेशन डे के अवसर पर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी। उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाले छात्र छात्राओं को पुरूष्कृत किया गया। कोर्डिनेटर ईशा चौधरी ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। ग्रुप चैयरमेन नवरंग चौधरी लालासी ने ग्रुप के 18 सालों के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न शहरों में आधा दर्जन से अधिक कैम्पस में संचालित प्ले ग्रुप से पीजी कक्षाओं के बारें में जानकारी देते हुए संस्थान का सहयोग करने पर अभिभावकों व स्टाफ सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

पोस्टर से दिया वन्यजीव संरक्षण का सन्देश

लक्ष्मणगढ़ **(निजसंवाददाता) |** भगवानदास. तोदी महाविद्यालय में वन्य जीव सप्ताह के तहत शनिवार के पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें छात्र- छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। प्राचार्य डॉ एनएस नाथावत ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हिना गुचिया, द्वितीय स्थान निशा शर्मा व शिवानी तथा तृतीय स्थान पूजा जांगिड़ व इप्सिता शर्मा ने प्राप्त कया । विभागाध्यक्ष गुलशन वर्मा तथा डॉ राशिद अली ने पर्यावरण संरक्षण में वन्य जीवों के योगदान की जानकारी दी | प्राचार्य ने विद्यार्थियों के वन्यजीवों के संरक्षण एवं पर्यावरण को बचाने की शपथ दिलवाई | प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. आनंद शर्मा एवं सहायक आचार्य सुशील टाक थे |

पौध वितरण, संरक्षण का दिलाया संकल्प

लक्ष्मणगढ़ | ऑक्सीजन जन आंदोलन - एक व्यक्ति एक पेड़ अभियान के तहत क्षेत्र के राजकीय महात्मा गांधी विद्यालय जाजोद में शनिवार 'को पौधरोपण एवं पौध वितरण कार्यक्रम किया गया। सेवानिवृत्ति प्रधानाचार्य बजरंग लाल जेठू के मुख्य आतिथ्य में हुए कार्यक्रम में वृक्ष मित्र श्रवण कुमार जाखड़ की ओर से विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों को पौधे वितरित किए गए। प्रधानाचार्य जोगेंद्र सिंह रणवां ने बताया कि विद्यालय में पौधरोपण कर विद्यार्थियों व स्टाफ सदस्यों को उनके संरक्षण की शपथ दिलवाई गई।

महात्मा गाँधी इंग्लिश स्कूल को मिले तीन व्याख्याता

लक्ष्मणगढ़ (निजसंवाददाता) 1 अक्टूबर | उपखंड मुख्यालय स्थित राजकीय महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल में विज्ञान संकाय के व्याख्याताओं की नियुक्ति की गई है। प्रिंसिपल डॉ. अशोक कुमार जांगिड़ ने बताया कि स्कूल में सीनियर कक्षाओं के लिए फिजिक्स, मैथ्स व कैमेस्ट्री के व्याख्याताओं का पदस्थापन किया गया है। डॉ. जांगिड़ ने बताया कि सरकार की महत्वाकांक्षी फ्लैगशिप योजना में स्कूलों में व्याख्याताओं के पदस्थापन के लिए विभाग ने चयन परीक्षा, काउंसलिंग तथा इंटरव्यू सहित गहन मूल्यांकन प्रक्रिया के बाद नियुक्ति दी है। शनिवार को स्कूल में नवागंतुक फिजिक्स के रघुनंदन शर्मा, मैथ्स की लक्ष्मी कुमारी तथा कैमेस्ट्री के विकास कुमार शर्मा का स्टाफ सदस्यों, विद्यालय विकास समिति सदस्यों व अभिभावकों ने स्वागत किया |

शोक सम्वेदना

बहुत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि **श्रीमती सम्पति देवी पत्नी श्री लालचंद सुबका**, वार्ड नंबर 25 पुराना 17 केसरी नन्दन बालाजी के पास लक्ष्मणगढ़ (सीकर) का 03 अक्टूबर 2023 को स्वर्गवास हो गया ।

उनके निधन पर अपना गहरा दुःख एवं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुये परमपिता परमात्मा से उन्हें अपने श्री चरणारविन्द में स्थान देने की प्रार्थना करते हैं |

शोकाकुल :- पुत्र विनोद कुमार एवं सुबका परिवार

।। हरि ॐ तत्सत् ।।

बहुत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि **श्रीमती गीता देवी पत्नी स्व. श्री विष्णु दत्त ढण्ड**, पंडितों की हवेली, वार्ड नं. 36, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) का 10 अक्टूबर 2023 को स्वर्गवास हो गया ।

उनके निधन पर अपना गहरा दुःख एवं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुये परमपिता परमात्मा से उन्हें अपने श्री चरणारविन्द में स्थान देने की प्रार्थना करते हैं |

शोकाकुल :- मुरारी लाल पंडित, ओम प़काश पंडित, सुशील पंडित, जयेश पंडित (भतीजा) एवं समस्त परिवार जन लक्ष्मणगढ।

।। हरि ॐ तत्सत् ।।

बहुत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री तिरुपति बालाजी मंदिर के **महंत श्री संजय पाराशर**, वार्ड नम्बर 24 खाटूवाले मंदिर के पास सत्संग भवन, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) का 13 अक्टूबर 2023 को स्वर्गवास हो गया ।

उनके निधन पर अपना गहरा दुःख एवं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुये परमपिता परमात्मा से उन्हें अपने श्री चरणारविन्द में स्थान देने की प्रार्थना करते हैं |

।। हरि ॐ तत्सत् ।।

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्त जोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थान | कृष्णा प्रिन्टर्स के लिये सागर कम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित | प्रबन्ध सम्पादक- डॉ. महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी

शेखावाटी सन्मार्ग को online पढ़ने के लिये www.srrividya.com वेब साईट विजिटकरें |